३. संस्मरणांजलि

संस्मरणांजलि

कोटिसूर्यसमप्रभः

श्रीमती वासंती सोढ़ानी, ग्वालियर

सर्व प्रथम संध्यावंदन करते हुए श्री प्रथमेश जी महाराज के जब मैंने दर्शन किये तो लगा जैसे अत्यंत जाज्वल्यमान अनेक सूर्यो की आभा इस स्वरूप में हो । परम प्रतिभाशाली एवं अत्यंत प्रतापशाली बहुत लम्बे चौड़े । उस स्वरूप के दर्शन करते ही मेरी आंखें बंद हो गयीं, कुछ क्षणों पश्चात् पुनः मेरी आंखें खुलीं फिर वही स्वरूप फिर आंखें वंद करलीं । तीसरी बार फिर वही स्वरूप । उस स्वरूप को देखने की मेरी हिम्मत नहीं हुई और मैं घर लौट आयी । सायंकाल मैं पुनः आपश्री के दर्शन करने गयी तो आप सामान्य रूप से ही बिराजे थे । दूसरे दिन संध्या वंदन के समय वही 'कोटिसूर्यसमप्रभः' दर्शन थे । मेरी आंखें पुनः बंद । मेरी दशा देख आपश्री ने आज्ञा की कि बैठो ! मैं बैठ गयी । पर उस स्वरूप के दर्शन न कर पाने के कारण शीघ्र ही उठकर चली गयी । तीसरी वार ग्वालियर में संध्या करते समय ध्यान में ऐसे ही दर्शन । मैं बैठना चाहकर भी नहीं बैठ पायी । फिर अनेक बार संध्या वंदन के समय बैठ चुकी हूँ, पर ऐसे दर्शन फिर कभी नहीं हुए ।

चारभुजाधारी

माधुरी बहन भाटिया, कलकत्ता

कलकत्ता में एक वंगाली महिला श्री ठाकुरजी के दर्शन करने आयी । उस समय श्रीजी के शयन के दर्शन हो चुके थे । वह अत्यंत पश्चात्ताप करने लगी, कि मैं तो बहुत दूर से आयी थी । वड़े दिनों से मेरी इच्छा थी, तव कहीं जाकर आज यहाँ आना हुआ, आदि-आदि । तव एक वैष्णव वहन ने कहा कि -"वाई ! अव तो कुछ नहीं हो सकता। चलो आई हो तो हमारे गुरुजी के दर्शन कर लो ।" पूज्य महाराज श्री हॉल में विराजे थे। दोनों जाकर सामने बैठ गयीं । कुछ देर वाद वह वंगाली महिला उस वैष्णव बहन से कह रही थी कि क्या तुम्हारे गुरुजी की चार भुजाएँ है । वैष्णव वहन आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखने लगी, तो वह सकपका गयी । थोड़ी देर बाद फिर वह कुछ जोर से बोली - 'क्या तुम्हारे गुरुजी की चार भुजाएँ हैं ?' यह वात वैष्णव महिला और महाराजश्री दोनों ने सुन ली । महाराज श्री त्वरित गति से कमरे में चले गये । वैष्णव वहन वोली - 'वाई तेरे वड़े भाग्य हैं जो तुझे चारभुजारूप से दर्शन दिये ।' ऐसे थे प्रथमेश जी ।

आशीर्वाद से नवजीवन

श्री ब्रजमोहन सोढ़ानी, ग्वालियर

सात या आठ साल पहले की वात है । मैं पटना के पास गांव में वहुत वीमार था। वेहोशी की हालत में पास में कोई भी नहीं था । तभी ऐसा लगा कि पूज्यपाद श्री प्रथमेशजी महाराज पधारे हैं।उनके साथ डॉक्टरों का एक दल भी था । आप श्री ने कहा कि तुम बिल्कुल भी चिंता मत करो । मेरा आशीर्वाद है तुम एकदम ठीक हो जाओगे । अब तुम पटना चले जाओ । पटना आते ही सीनियर डॉक्टर को दिखाने पर वे कहते हैं कि "मुझे तो आश्चर्य है कि इस व्यक्ति का अपेन्डिक्स सात दिन पहले ही फट चुका है। आश्चर्य है कि यह व्यक्ति अब तक जिंदा कैसे है ?" सर्जन ने आशंका व्यक्त करते हुए कहा - हो सकता है, आपरेशन के समय ये टेबल पर ही रह जाय ।" किन्तु पूज्यपाद महाराज श्री के आशीर्वाद के फलस्वरूप मैं आज भी सकुशल हूँ । आप श्री का प्रताप लौकिक एवं अलौकिक स्तरों पर हम लोगों ने अनेक वार देखा और अनुभव किया है ।

भीषण ज्वाला का पान

उमा कर्वा, डिब्रुगढ़ (आसाम)

पुरी में जिस समय पूज्य महाराज श्री ने जब सोमयज्ञ किया था, मैं वहाँ गयी थी। इधर डिब्रुगढ़ में हमारे मकान में आग लग गयी । घर पर केवल मेरा लड़का मधुकर ही था । जव सर्विसिंग की छत पर से आग की लपटें ऊपर उठने लगीं तो वहाँ हमारे सभी रिश्तेदार एवं अपार भीड़ जमा थी । सब कहने लगे कि अव क्या देखते हो, घर में जो कुछ है लेकर वाहर आ जाओ । इधर जो जिसके हाथ लगा गाड़ियां, स्कुटर, पूर्जे आदि ले जा रहे थे । २५ वर्षीय मधुकर को कुछ भी मालूम नहीं था कि घर में कहां क्या कुछ रखा हैं ? वह केवल श्री प्रथमेश जी महाराज के चित्र को दण्डवत् करके वाहर निकल आया । आते ही क्या देखता है कि पूज्य महाराज श्री बहुत बड़ा स्वरूप धारण करके सर्विसिंग की छत पर खड़े हैं , और मुखारविन्द खोलकर दोनों श्री हस्त से अग्नि को पी रहे हैं । मधुकर आश्चर्यचकित होकर देखने लगा । ४-५ मिनिट तक देखता रहा।लोगों ने समझा कि यह विक्षिप्त होकर देख रहा है, अतः उसे वाहर निकालकर ले गये। पर तव तक अग्नि जो भीषण रूप धारण किये हुए थी और सारे आसाम की दमकलों से भी नहीं वुझ पायी थी - वह वुझ चुकी थी । आप श्री का यह प्रताप एवं चरित्र अप्रतिम ही है।

अनुग्रह ही चमत्कार

कमलादेवी माहेश्वरी, कलकत्ता

भक्तिमार्ग में यद्यपि चमत्कारों का कोई महत्व नहीं है फिर भी जनरक्षा अथवा दृढ़ निष्ठा के लिए कभी-कभी चमत्कार भी देखने में आते हैं । ऐसा तो कई वार होता था कि जिस विषय को लेकर 'महाराज श्री' से वात करने का विचार हम लोग करते थे, उनके पास जाकर हमारे वात शुरु करने से पूर्व ही महाराजश्री उसी विषय को लेकर वोलते थे और हम सभी आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे का मुँह देखने लग जाते थे ।

कठिन कार्यों को जब मैं नहीं कर पाती तब उनका नाम लेते उनके आश्रय से कार्य वहुत आसानी से हो जाता था । मेरा विश्वास है कि आपश्री का नाम लेकर अथवा आपश्री का आश्रय लेकर आज भी कोई कार्य करेगा तो सफल होगा क्योंकि आपश्री तो नित्य हैं ।

आपश्री के संबंध में दो तीन घटनाएँ याद आ रही हैं, वे मैं लिख रही हूँ इन घटनाओं को चमत्कार कहें या अनुग्रह, कुछ समझ में नहीं आता । ऐसा लगता है कि आपश्री का शरणस्थ जीवों के प्रति जो अमीम अनुग्रह था वही समय - समय पर चमत्कार का रूप धारण कर लेता था ।

कृपा से ही जीवनदान

घटना अक्टूबर १९८८ की है। मेरा बड़ा लड़का विनोदकुमार बम्बई से आ रहा था । रास्ते में हवाई जहाज में ही उसको भयंकर सिरदर्द शुरु हो गया । उतरते ही उसे उल्टी भी हो गयी । छोटा लड़का उसे लेने गया था । रास्ते में ही डॉक्टर को भी दिखा दिया था पर इतना भयंकर सिरदर्द था कि सहन नहीं हो पा रहा था । साथ में उल्टियाँ भी होती रहीं । दवाई तक भी नहीं टिक पाती थी । डॉक्टर ने ग्लूकोज ड्रिप्स के लिए कहा । उसे नर्सिंग होम में भर्ती करवा दिया । वहाँ सिरदर्द आदि तो कम हुआ । पीठ में लम्वर पंचर करके फ्लूईड निकाला था । उसके वाद हिचकी चालू हो गयी थी जो वारह दिन तक लगातार रही और लड़का किसी भी प्रकार से कोई दवा तथा खुराक नहीं ले पा रहा था । हिचकी लेने में उसका शरीर काँपता था । कमजोर इतना हो गया था कि उठकर चल भी नहीं सकता था ।

पूज्यपाद प्रथमेशजी महाराज उस समय अमेरिका से पधारे ही थे । माधुरी वहन ने उनसे वात की । उन्होंने कुछ दवाईयाँ वतायीं । माधुरी वहन ने मुझसे कहा कि आप

ही चलें आपश्री से पूछ लें । मैं मंदिर गयी। आपश्री ने सारी तकलीफ सुनी और आज्ञा कि कि ''उसको कुछ नहीं है, कल ठीक हो जायगा'' । कुछ दवाईयाँ भी बतायीं । दवा चालू कर दी । वह दिन तो निकल गया । मैं इंतजार कर रही थी दूसरे दिन का । उस समय एक एक पल निकालना भारी लग रहा था । दूसरा दिन भी सारा निकल गया और संध्या समय अचानक ही एकाएक हिचकी वंद हो गयी।जैसी उनकी आज्ञा से ही वंद हो गयी थी । दवा से वंद होती तो दो दिन तक धीरे - धीर कुछ तो फरक होता अचानक कैसे वंद होती । 'आपश्री की कृपा से ही लड़के को जीवनदान मिला है 'ऐसा महाराजश्री से निवेदन किया तो वड़ी सरलता से वोलते हुए आपश्री ने उत्तर दिया - 'आप तो ऐसे ही घवरा गयी थीं । उसको तो कुछ भी नहीं था ।'

केम्प में विराजते हुए भी बाहर दर्शन

इलाहवाद में कुंभ पर्व पर सोमयज्ञ का आयोजन हुआ था । कलकत्ते से मैं भी अपने छोटे पुत्र राजीव के साथ इलाहवाद पहुंची । उस दिन इलाहवाद में वाहन वालों ने हड़ताल कर रखी थी । वहुत मुश्किल से एक आदमी हमारा सामान लेकर सोमयज्ञ में 'वल्लभाचार्य नगर' जाने को तैयार हुआ । किन्तु सुवह आठ बजे उतरे हम संध्या चार वजे तक वल्लभाचार्य नगर नहीं खोज पाये । मौसम भी ठंड का, ऊपर से भारी वर्षा और तूफान ; नीचे कीचड़ था, पैर भी फिसल रहे थे । अतः अन्त में हम निराश हो गये । सोचा अव इतने विशाल कुंभ क्षेत्र में वल्लभाचार्य नगर स्थान खोज पाना मुश्किल है क्यों न वापस चले जाएं । मजदूर वेचारे ने भी हमारा पूरा पूरा साथ दिया ।हम वापिस चलने को मुड़े ही थे कि एक कार में महाराजश्री को वैठे जाते देखा । मैं और मेरा लड़का दोनों एक साथ बोल पड़े - 'महाराजश्री'

तव हम लोगों में हिम्मत आयी । हमने सोचा कि अव तो वल्लभाचार्य नगर कहीं पास में ही होगा । लड़का मुझे पास के किसी आश्रम में वैठाकर वल्लभाचार्य नगर ढूँढने निकला । एक घंटे में वह आया और वोला वल्लभाचार्य नगर मिल गया । वहाँ पहुँच कर 'महाराजश्री' के दर्शन करने के लिए पूछा कि महाराजश्री कहां विराजे हैं ? उत्तर मिला कि महाराजश्री आज कहीं भी वाहर नहीं पधारे अपने केम्प में ही विराज रहे है । वहुत आश्चर्य हुआ और मन भर गया आपश्री के अनुपम अनुग्रह पर कान ढँकी टोपी रूईदार और गेरुआ केसरिया वस्त्रों सहित आपने जिस प्रकार कार में दर्शन दिए थे वैसे ही यज्ञ स्थल पर भी दर्शन दिये ।

ऐसा लगता है कि क्या अव मुँह कहानियाँ ही कहा करेंगे और कान कहानियाँ ही सुना करेंगे ? अव यह प्रत्यक्ष दर्शन मिलेगा कहाँ ?

भूत भी भागे

घटना १९७१-७२ की है । टैगोर कैरल में रहते थे । हमारे बगल के कमरे में सोहनलालजी डागा रहते थे । वे बहुत खानदानी वैष्णव थे । घर मे उनके गोपालजी विराजते थे । पति-पत्नी दोनों सेवा-परायण थे । उनकी मझली लड़की पार्वती थी, उसकी उम्र २४-२५ वर्ष होगी । उसके एक छोटा लड़का भी था ।

पता नहीं किस तरह से वह लड़की भूत-प्रेत से प्रभावित हो गयी । रात-दिन सयाने झाड़फूँक करने वाले लोग उनके यहाँ आते और लड़की की पिटाई होती । मेरा दिल बहुत जलता । मैंने एक दिन उसकी मां से कहा कि - 'आप वैष्णव होकर किस चक्कर में पड़ गये हो ?'' वास्तव में जव किसी पर विपत्ति आती है तो धैर्य रखना वड़ा कठिन हो जाता है । उसकी माँ ने कहा - 'आप ही वताइए क्या करें ?' मैंने उनको महाराजश्री के पास जाने की सलाह दी । उन्होंने कहा कि 'उनके पास तो हमारी जाने की हिम्मत नहीं होती आप ले चलिए ।' मैंने कहा - 'ठीक है ।'

दूसरे दिन हम लोग महाराजश्री के पास पहुँचे । उस समय आपश्री संध्यावंदन कर रहे थे । मैंने इनकी सारी बात महाराजश्री से निवेदन कर दी । तब आपश्री हँसे और बोले ''हमारे पास भूतों को ही लाओगे क्या ?'' मैंने कहा - 'जय जय आपके जन हैं और कहाँ जाएंगे ?' तब आपश्री ने संध्या का जल देकर कहा - 'ठीक हो जाएगी' । जल देने पर इनकी लड़की पार्वती ठीक हो गयी । भूत प्रेत की पीड़ा ही नहीं वल्कि उसका स्वास्थ्य भी पहले से अच्छा हो गया तथा उसकी आर्थिक परिस्थिति भी सुधर गयी ।

त्याग मूर्ति

अधिकारी श्री रघुनाथप्रसाद कटारा, कोटा

आप के जैसे उच्च विचार थे वैसे भी आप त्यागी भी थे । त्याग संवंधी कुछ घटनाओं का यहाँ उल्लेख करना उचित है । सन् १९५३ में जब श्री मथुराधीश प्रभु को कोटा से जतीपुरा पधराया उस समय ग्रीष्म काल था । जून का महीना था । आपश्री जब श्रीजी को शैया मंदिर से झापी में पधराने लगे तो मैंने निवेदन किया - कृपानाथ श्री ठाकुरजी को धराने के लिये कुछ आभूषण तो लिए हैं या नहीं ? तो आप श्री ने कहा -- 'नहीं, हमें नारायण चाहिये लक्ष्मी की आवश्यकता नहीं है ।' इसी प्रसंग से अनुमान लगा सकते हैं कि आपश्री में त्याग की भावना कैसी थी ।

दूसरी घटना भी सन् १९५३ की ही है । जन्माष्टमी के उत्सव पर जतीपुरा में आपश्री विराज रहे थे । तभी अहमदावाद के सेठ श्री गोविन्ददास माणेकलाल सपत्नीक

जतीपुरा आये और एक दिन सेठ श्री गोविन्द भाई ने मुझसे कहा कि 'आप महाराज श्री के पास जाकर निवेदन करो कि आपश्री कोटा से ठाकुर जी का कुछ शृंगार नहीं लाये हैं अतः मेरी इच्छा करीब एक सौ तोला स्वर्ण का शृंगार बनवाने की है । मैं सोना दे दूँगा महाराज श्री जैसा शृंगार चाहें बनवा लें । मैंने आपश्री से विनती की तो आप श्री ने आज्ञा की --'नहीं, यह नहीं हो सकता मैं स्वयं ही बनवा दूँगा । मुझे किसी से कुछ नहीं लेना।'

विद्वज्जन पोषक

कु. रेखा सिंघल, धार

एक बार मेरे बाबूजी डॉ. गजानन शर्मा आप श्री के पास बैठे थे । विभिन्न दार्शनिक विषयों पर चर्चा चल रही थी । काफी समय व्यतीत होने के बाद बाबूजी ने आप से जाने की आज्ञा चाही । आप श्री ने पूछा - 'कहां जाना है ?' ''शाहजी के पास जाकर कुछ ग्रंथ लाने हैं ।'' 'कौन से ग्रंथ चाहिए सूची बना कर दीजिए ।' आप श्री को सूची दी गयी । आपश्री ने खवास को सूची देकर भेजा । खवास ग्रंथ लेकर आया । आपश्री ने पेकेट खोलकर बिल अपने आप रख लिया और ग्रंथ बाबूजी को दे दिये । उन के बहुत आग्रह करने पर भी बिल नहीं दिया और आज्ञा की - 'आपको ग्रंथ चाहिए थे, ग्रंथ मिल गये ।' आप सहज भाव से मुस्कुरा दिये । ऐसे परम उदार और विद्वज्जन - पोषक थे आपश्री । विद्वानों का सम्मान करना और उन्हें ग्रंथ आदि भेंट करते रहना यह आपश्री का स्वभाव ही था ।

जो भूल नहीं सकता

श्री कुमनदास जी झालानी

कार्य करने वाले प्रभु हैं, तुम नहीं

जून १९६८ में अ०भा०पु० वैष्णव परिषद के तत्कालीन प्रधानमंत्री पूज्य पिताश्री श्री गोपालदास जी झालानी का देहावसान हो जाने पर परिषद के कागजात सुपुर्द करने मैं परिषद की मीटिंग में गया । पू०पा० प्रथमेशजी प्रचाराध्यक्ष थे । आपश्री ने मुझे ही यह पद सँभालने की आज्ञा दे दी । इस स्तर पर कार्य कभी किया नहीं था । और अपनी अक्षमता तथा अयोग्यता दर्शाते हुए मैंने अपनी असमर्थता प्रकट की । आपश्री ने कहा कि ''तुम्हें तो अपना नाम ही इस पद के लिये देना है । काम करने और कराने वाले तो प्रभु ही हैं ।'' विवश हो काम करना प्रारंभ किया । प्रभु निभा रहे हैं ।

अपना काम करने में थकावट कैसी

परिषद के कार्य में निरंतर व्यस्तता- प्रवास, परिश्रम से आपश्री को कभी घबराते

नहीं देखा - पैदल और वह भी कभी विना पदत्राण (जूते) के । न भोजन की, न नींद की और न अपने स्वास्थ्य की चिंता ।एक वार आपश्री से निवेदन किया कि इतना परिश्रम न करें । शरीर में थकावट तो होती है स्वास्थ्य भी विगड़ता है । उत्तर मिला - ''अपने काम में थकावट का प्रश्न ही नहीं और फिर परिषद् का कार्य तो प्रभु सेवा के समान है - सेवा में थकावट कहाँ ?''

असावधानी की भूल

उज्जैन में सिंहस्थ के अवसर पर पर्व स्नान करने जाते समय शोभा यात्रा में व्यवस्था - संवंधी गड़वड़ी हो जाने से वैष्णवों विशेषकर महिलाओं को असुविधा होती देख कर आप अप्रसन्न होकर अपने टेन्ट में वापिस पधार गये । मैं भी वापिस आकर सामने वैठ गया । शोभा यात्रा आगे वढ़ गई । कुछ समय दोनों चुप वैठे रहे । वाद में आपश्री ने आज्ञा की कि शोभायात्रा में जाते क्यों नहीं ? मैने निवेदन किया कि आपश्री के विना शोभा यात्रा और स्नान कैसा? कार्यकर्ताओं से त्रुटि हो जाती है, क्षमा करें । आपश्री ने कहा ''त्रुटि हो जाना अलग वात है - असावधानी से त्रुटि करना अलग वात है ।''

पुनः विनती करने पर आप पधारे तो सही किन्तु कार्यकर्ताओं को सावधान रहकर कार्य करना चाहिये, ऐसी आज्ञा देकर ।

कटु सत्य कहने में डर क्यों ?

परिषद् के हित का चिन्तन उन्हें सदैव वना रहता था । यदि कोई कार्यकर्ता परिषद् के हित के विपरीत कार्य करे अथवा कहे तो आप अत्यंत अप्रसन्न हो जाते थे । इस मामले में आचार्यों का भी मुलायजा नहीं करते थे तथा कठोर शव्दों में आलोचना कर देते थे । मुझे और मेरे मित्र श्री वृजलाल भाई सोनी को यह साधारण लौकिक व्यवहार के अनुसार ठीक नहीं लगता था । हमने एक दिन समय देखकर आपश्री के सम्मुख अपने विचार प्रकट कर दिये । उस समय तो आपने कुछ नहीं कहा परन्तु खुली सभा में आपश्री ने व्यक्त कर दिया - ''आज झालानी जी ने मुझसे ऐसा ऐसा कहा, किन्तु जब मैं कहीं भी परिषद् के हित में विपरीत कुछ होता देखता हूँ तो मुझे अत्यंत दुःख होता है और मैं निःसंकोच अपने भाव तथा अपनी व्यथा प्रकट कर देता हूँ । कटु सत्य से किसी को बुरा लगे भी तो डर क्यों ?''

परिषद् - कार्य की शिथिलता से अप्रसन्नता

एक वार आपश्री वंवई से प्लेन से इन्दौर पधार कर एअरपोर्ट से कार द्वारा सीधे उज्जैन पधारने वाले थे । मुझे पता लगने पर मैं भी एअरपोर्ट गया और आपश्री से पहिले कुछ समय हेतु घर पधारने और वाद में उज्जैन के लिये विनती की । आपश्री ने कहा -

''परिषद् का कार्य शिथिल हो रहा है । हम प्रधानमंत्री से अप्रसन्न है ।'' मैंने विनती की घर पधारने का निवेदन कुमनदास कर रहा है, परिषद् का प्रधानमंत्री नहीं । आपश्री मेरी ओर देखकर मुस्करा दिये और साथ में चल पड़े ।

कितना अनुग्रह, कितना अपनत्व

श्री शिवशंकर भीमवाल

मैं पुष्टिमार्गीय वैष्णव नहीं हूँ। पू.पा. प्रथमेशजी के दर्शन का सौभाग्य मुझे मेरे स्वसुरगृह गोपालदासजी झालानी के यहाँ उनके ठाकुर जी के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर हुआ । प्रथम दर्शन में ही मैं उनसे अत्यंत प्रभावित हुआ व उनकी भी मुझ पर अपने शरणस्थ जीवों के समान ही सदैव कृपा बनी रही । कलकत्ते में प्रायः ही मैं उनके दर्शन करने जाता रहता था । वे भी किसी कार्य के लिए कभी-कभी मुझे बुला लेते थे । यथार्थ में उनका कार्य तो एक वहाना ही होता था दरअसल वे मुझ पर अनुग्रह ही करते थे ।

मुझे संगीत सुनने का शौक है व मेरे पास शास्त्रीय संगीत, वाद्य-संगीत, गजल, भजन आदि सभी तरह के संगीत के टेप हैं । महाराजश्री प्रायः ही मुझसे टेप मंगाकर सुनते थे । उनके यहाँ भी जब संगीत या कीर्तन आदि का आयोजन होता था मुझे बुलवाते थे । आपको जब हार्ट-अटैक आया उसके पश्चात् जब उन्हें घर में विश्राम करने का परामर्श दिया गया था, तव मुझे बुलवाकर बोले - ' मुझे - - - -का टेप मंगाकर दीजिये'। मैंने देखा कि उन्हें सभी तरह के संगीत व वाद्य में अत्यंत रुचि व अद्भुत ज्ञान है । वे स्वयं भी गाते एवं सव वाद्य बजाते हैं । मेरी पत्नी के आग्रह पर एक बार मेरे घर पधारे थे । आधे घंटे तक मेरे अलग-अलग टेप सुनते रहे ।

मेरा व्यवसाय दवाइयों का था । उनको भी दवाइयों का बहुत ज्ञान था । वे सवको दवाई देते भी थे । कई बार मुझसे दवाइयां मँगाते व किस बीमारी में क्या दवा देनी चाहिए, इस वारे में सलाह भी करते थे । कभी -कभी हंसी में कहते थे आप मुझे मोटापा कम करने की दवा दीजिये । एक वार तो स्वयं दुकान पर पधारे व कुछ दवाइयाँ ले गये।

मुझे पेड़-पौधे व फूल वगैरह लगाने में भी रुचि है । मैं कभी-कभी महाराजश्री के दर्शन करने जाता तो वगीचे में से दो-चार गुलाब के फूल ले जाता । जब उनको फूल देता अपने खवास को वुलाकर फूल में से काँटे वगैरह निकालकर कहते कि जाओ, मुखियाजी को दे दो, ठाकुरजी को धरा देवें ।

एक दिन शाम को महाराजश्री के पास जाने की इच्छा हुई । आठ वज चुके थे । पत्नी के संग दर्शन करने गया , पहुंचते-पहुंचते साढ़े आठ वज गये थे । मूलजी भाई से पूछा - महाराजश्री हैं ? वे वोले - अव तो अंदर पधार गये । सब वैष्णव भी चले गये। वातचीत शायद आपने अंदर सुन ली । तुरंत वाहर आये, वोले- 'आइये-आइये' और

बैठक में बैठ गये । आपने दोने में प्रसाद मंगाकर दिया । हम लोग घर आये । सोचता हूँ कि वल्लभ संप्रदाय के महान् आचार्य के हृदय में मुझ जैसे साधारण जीव के प्रति भी कितना अनुग्रह एवं अपनत्व का भाव था । श्रद्धा से मन भर आता है , सिर उनके चरणों में झुक जाता है । मेरे प्रति ही नहीं, मैंने अनेक अवसरों पर देखा कि कोई भी उनके पास आया आपने सबको समान भाव से आदर एवं प्रेम दिया ।

आज वे हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनकी स्मृति मेरे हृदय - पटल पर आज भी बनी हुई है । याद आते ही आँखें सजल हो जाती हैं । ऐसा ही अनुभव होता है, जैसे वे अपनी कृपा दृष्टि से मुझे देख रहे हैं ।

चमत्कारी 'आपश्री'

शारदा बहन भीमवाल

प्रभु - कृपा से कलकत्ते में पू.पा. श्री प्रथमेशजी के दर्शन, प्रवचन सुनने एवं उनके सामीप्य का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ उसकी अनेक स्मृतियाँ मन में आज भी उभरती रहती हैं । एक दिन मैं मंदिर में दर्शन करने गई थी । शाम को दर्शन के पश्चात् मंदिर की सीढ़ियों पर बैठी थी । घर से गाड़ी लेने आने वाली थी । उसी की प्रतीक्षा थी । सब वैष्णव चले गये थे । थोड़ी देर में प्रथमेशजी उधर आये बोले - 'आप कैसे बैठी हैं ?' मैंने कहा - 'गाड़ी आनेवाली है ।' आप अंदर चले गये । कुछ समय पश्चात् फिर किसी काम से बाहर आये, बोले - 'आपकी गाड़ी नहीं आई ।' मैंने कहा- ''कुछ देर देखती हूं फिर चली जाऊँगी ।'' आपने कहा --'आप अकेली टैक्सी में नहीं जावें ' फिर ड्राइवर को बुलाकर कहा कि इनको अलीपुर घर छोड़कर आओ ।

कलकत्ते में ब्रजेश्वरजी के मंदिर में कीर्तनिया नहीं है । वैष्णव लोग ही कीर्तन करते हैं । एक दिन शाम को दर्शन के समय कीर्तन करने वाले कोई और वैष्णव नहीं थे। मुखियाजी ने कहा - 'शारदा बहन आप ही कीर्तन करो ।' मैं कीर्तन करने लगी । महाराजश्री आरती करने पधारे । आरती करने के बाद हारमोनियम लेकर बैठ गये, बोले - ''आप स्वर को दबाकर गाती हैं , खुलकर गाइये ।'' एक तुक भी गाकर बताई ।'

ऐसे ही एक और दिन फागुन में शाम को तीन-चार वैष्णव दर्शन के समय रसिया गा रहे थे । महाराजश्री मृदंग लेकर बैठ गये । साथ में रसिया गाने लगे । आधे घंटे तक सब वैष्णवों के साथ गाते रहे । उस दिन जो आनंद मिला, उसकी स्मृति आज भी बनी हुई है ।

एक दिन हम लोग ५-७ वैष्णव महाराजश्री के पास बैठे थे । सेवा का कुछ प्रसंग चल रहा था । हमने पूछा -'सेवा किस प्रकार करनी चाहिए ?' आप बोले - 'अपने जैसी।' आपने फिर कहा - बैठकजी में आप लोग झारी भरते हैं । एक के ऊपर एक वैष्णव झारी भरते जाते है । महाप्रभु जी कितना जल अरागेंगे ।

महाराजश्री से सब वैष्णव अपनी पारिवारिक समस्याओं के बारे में भी चर्चा कर लेते थे । आप सबकी समस्याओं का समाधान भी करते थे । मेरी प्रकृति इस तरह की कोई बात करने की नहीं है फिर भी एक दिन साहस करके पूछा कि लड़के के विवाह को ७-८ साल हो गये संतान नहीं है । आपने कहा दोनों को सुबह ८-९ ।। बजे ले आइये। दूसरे दिन मैं लड़के और बहु को लेकर गई । आपने १५ मिनट तक लड़के से बातचीत की । कितने बजे उठते हो, घूमने जाते हो या नहीं, भोजन में किस चीज की रुचि है, रसे वाली चीज पसंद है या सूखी । कितने मित्र हैं, कितना मिलना-जुलना है । व्यवसाय में दिन भर में कितने लोगों से मिलते हो, आदि तब तरह के प्रश्न पूछे । दो-चार बातें वहु से भी पूछी । फिर दोनों को दिनचर्या के बारे में कुछ निर्देश दिये । औषधि लिखकर दी । बोले - 'प्रभु कृपा से सब ठीक होगा ।' आज उनकी कृपा से पुत्र के यहाँ दो संतानें हैं ।

अनुशासन - प्रियता

श्री गोपालदास वेद, उज्जैन

शांति-शिविर उज्जैन में त्रिदिवसीय परिषद् अधिवेशन एवं अन्य कार्यक्रम हो रहे थे। प्रभु श्री मदनमोहनलालजी एवं श्री व्रजेश्वरलालजी को भी आचार्य श्री की वैठक पर पधराया गया एवं श्रीजी के भव्य मनोरथ हुए ।

शिविर में सम्माननीय अतिथियों के उद्बोधन हो रहे थे । संध्या का समय रात में वदल रहा था । उत्सव के दर्शन खुलने वाले थे । उद्बोधनों के चलते समय दर्शन खुल जाने से सभा में व्यवधान पैदा हो जाना स्वाभाविक था । आपश्री ने देखा और तुरंत ही दर्शन का टेरा वापस लेने का आदेश दिया और पुनः सभा की कार्यवाही चालू करवायी उस दिन किसी को ठाकुरजी के मनोरथ के दर्शन नहीं करवाये । उस दिन जितने भी मनोरथ होने वाले थे, वे भी निरस्त कराये । उन्हें अनुशासन अत्यधिक प्रिय था । अधिवेशन और सभाओं में किसी भी प्रकार की अव्यवस्था आपको असहनीय थी ।

कृपापात्रता का अनुदान

प्रथम वल्लभाचार्य नगर के निर्माण का मनोरथ 'आचार्यश्री' के द्वारा शांति-शिविर के वाद लिया गया । शासन एवं साधु-समाज से मान्यता -प्राप्ति के प्रयत्न आरम्भ कर दिये गये । 'आपश्री' उज्जैन में रहकर प्रचार-सामग्री अपने समक्ष भिजवाने लगे । पाल आदि की व्यवस्था के लिये अर्थ-प्रधान रहना स्वाभाविक है । अतः कार्यकर्ता वित्तीय प्रयास में रहे । आपश्री का प्रयत्न प्रत्येक शाखा के पाल का था । किंतु आठ दिन का समय शेष रहा सिंहस्थ प्रारम्भ होने को । पाल की सेवाएँ नहीं उपलब्ध होने पर कार्यकर्ता कुछ निराश होकर हवेली में चर्चा कर रहे थे नीचे।ऊपर 'आपश्री' को कुछ भनक हुई

और आपने आवाज देकर कार्यकर्ताओं को अपने पाल का एवं आठ-दस अन्य शाखाओं के पाल का शुल्क अपने गोलक से दिया और रसीद देने के लिये कार्यकर्ताओं को विवश किया । इतना ही नहीं अपने सामने वल्लभाचार्य नगर जाकर पाल वगैरह एवं श्री मदनमोहनलालजी को पधराकर मनोरथ स्थल का निर्माण करवाया । जिन कार्यकर्ताओं ने आपश्री के सानिध्य में इस कृपापात्रता का अनुदान ग्रहण किया वे अपने आपको धन्य मानते हैं ।

जे गुसांई याकूँ मारेगो

श्री विट्ठलदास सिंघल, ग्वालियर

ग्वालियर के वैष्णव श्री विट्ठलदास सिंघल को गोवर्धन में एक साँप ने काट लिया, जिससे जो वन पड़ा उपाय किया किंतु विष उतरने का नाम ही नहीं ले रहा था । जब सब ने जवाब दे दिया तो उन्हें जतीपुरा में महाराजश्री के पास लाये । महाराजश्री ने विनोद में कहा - ''अच्छा हुआ ले आये - इसके क्रियाकर्म तो मैं ही करूँगा ।'' फिर आप श्री ने एक गोली दी और खवास जी से कहा कि संध्या का जल ये जितना मांगे, उतना इनको पिलाते जाओ । जतीपुरा के लोग अपनी भाषा में कहने लगे- 'जे गुसाँई याकू मारेगो।' (मान्यता है कि जल पिलाने से साँप का जहर और ज्यादा चढ़ता है) आपश्री हँसते रहे और जल पिलाते रहे । आपश्री की कृपा से सिंघलजी एकदम अच्छे हो गये । वे आज भी आपश्री के अनेक प्रसंग रस ले लेकर सुनाते हैं ।

जतीपुरा से ग्वालियर तक पदयात्रा

श्री हरिदासजी, आगरा

परम पूज्य महाराज श्री ने अपना पूरा जीवन शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद के सिद्धांतों के प्रचार हेतु अर्पण कर दिया । आपश्री ने जतीपुरा से ग्वालियर तक पद यात्रा की । आपश्री के साथ वैष्णव समूह था । गांव-गांव में पड़ाव पड़ता, डेरा तम्बू लग जाते, उसकी शोभा देखते ही वन पड़ती थी ।

प्रातःकाल होते ही शहनाई वजने लगती । आप श्री संध्यावंदन आदि से निवृत्त होकर अपने वैष्णवजनों के साथ महाप्रभु श्रीमद्‌वल्लभाचार्यजी के, श्री गुसांई जी के स्तोत्रों का सामूहिक पाठ करते हुए पधारते ।

आगरा पधारने से पूर्व रुनुकता (रेणुका क्षेत्र) सूर कुटी पर आप श्री यमुना तट पर विराजे ।

आगरा में आपश्री का भव्य स्वागत कई संस्थाओं के माध्यम से हुआ । विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ताओं ने बैंड बाजे से स्वागत कर आगरा में पधराया । श्री अ.रा.पु. वैष्णव परिषद् ने मदिया कटरा सड़क पर प्रथमेश द्वार बनाया । अपार वैष्णवों की भीड़ थी । आपश्री के प्रवचन आगरा हिन्दी केन्द्रीय संस्थान, दैवी संपद मंडल वेलन गंज,

सनातन धर्म सभा, शहजादी मंडी, सदर बाजार आगरा आदि प्रमुख स्थानों पर हुए ।

आपश्री की अध्यक्षता में अष्टछाप संगीत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें मथुरा से चन्दन जी चतुर्वेदी आदि पधारे । हवेली संगीत के पीएच.डी. डॉ. सत्यभानु शर्मा, प्रेम महाविद्यालय दयालवाग का ध्रुपद धमार गायन अद्वितीय था । परंतु आपश्री ने जब ध्रुपद धमार का गायन किया तो आगरे के गवैये आश्चर्यचकित हो गये ।

आपश्री की अध्यक्षता में वृज भाषा कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया । जिसका संचालन आगरा के प्रमुख कवि श्री सुखराम सिंह चौधरी ने किया । आप श्री तो सर्वगुणसम्पन्न वहुमुखी प्रतिभासम्पन्न आचार्य थे । कवि सम्मेलन में आप श्री ने भी कविता पाठ किया । जिसको सुनकर सभी कवि नतमस्तक हो गये ।

आगरा में श्री नाथ जी की चरण-चौकी है । आप श्री ने वहाँ तपेली की । श्रीनाथ जी को सामग्री आरोगाई । और सैकड़ों वैष्णवों ने प्रसाद लिया ।

यहाँ से आप श्री मुरैना (म.प्र.) पधारे । दूसरी श्री नाथजी की चरण चौकी किशनपुर मे चम्वल नदी के किनारे हैं । आप श्री वहां पधारे तथा वहां भी तपेली आरोगाई । मुरैना के वैष्णवों ने आप श्री का भव्य स्वागत किया । सैकड़ों वैष्णवों ने महाप्रसाद लिया । अंत में आप श्री ने ग्वालियर म.प्र. में अपनी पद यात्रा पूर्ण की ।

ग्वालियर के वैष्णवों ने भव्य शोभा यात्रा निकाली । गोरखी ग्राउण्ड में आप श्री के नित्य प्रति प्रवचन होते थे । आपश्री के वचनामृत सुनने के लिये हजारों की संख्या में वैष्णव जनसमूह एकत्रित होता था । आप श्री का मुकाम गिरिराज धर्मशाला में था । इस प्रकार आप श्री ने हजारों जीवों को कंठी ब्रह्म संवंध देकर शरण लिया और उन्हें पुष्टिमार्गीय वैष्णव वनाया ।

हठी ब्राह्मण को मान भोग का प्रसाद

श्री रवजीभाई प . पटेल

राजकोट में सोमयज्ञ प्रारंभ होने वाला था, इसके पूर्व एक बार पूज्यपाद गोस्वामी श्री रणछोड़ाचार्यजी प्रथमेश महाराजश्री के प्रवचन का आयोजन किया किया । इस अवसर पर वाहर गांव के एक विप्र महाशय, जिन्हें वैदिक याग विषयक ज्ञान नहीं था, कुछ असंगत प्रश्न आपश्री से पूछने लगे । आपश्री ने उन्हें सरल भाषा में सोमयज्ञ विषयक तथा वैदिक योग विषयक जानकारी दी । किंतु उन ब्राह्मण देवता को समझ में नहीं आया। उन्होंने ऊटपटांग प्रश्न पूछना जारी रखा । उस समय उपस्थित विद्वान् शास्त्रीगण को भी उनका व्यवहार वहुत वुरा लगा और वे उस ब्राह्मण पर गरम होने लगे । महाराजश्री ने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए साथ के वैष्णवों से कहा- 'इन्हें अच्छी तरह से 'मान भोग' (सीरा) का प्रसाद लिवाने की जरूरत है । इनका अधिकार इस से अधिक नहीं है ।'

चोरों के लिए तांगे का किराया

प्रो. एम.आर.पालेजा

पूज्यपाद प्रथमेशजी महाराज श्री के पिताश्री द्वारकेशलालाजी महाराज ने सं. २००० के लगभग ब्रज चौरासी कोस की यात्रा का आयोजन किया। उस समय का एक प्रसंग है।

एक दिन ब्रज परिक्रमा के सभी वैष्णव सत्संग में थे । तव दो चोर चोरी करने के इरादे से परिक्रमा के पाल में घुस गये । महाराजश्री के सजग पहरेदारों ने उन दोनों चोरो को पकड़ लिया और पीटते हुए उन्हें आप श्री के सामने हाजिर किया ।

परमदयालु प्रथमेशजी बाबा श्री ने आज्ञा की - 'इनको पीटो मत, इन्हें पुलिस को सौंप दों ।'

आदेशानुसार पहरेदारों ने दोनों चोरों को पुलिस के सुपुर्द कर दिया । पुलिस ने दोनो चोरों को मथुरा की पुलिस चौकी में पहुँचाने की व्यवस्था की । सिपाही घोड़ों पर वैठे और दोनों चोरों को बांधकर पैदल चलाया जाने लगा । यह देख कर प्रथमेश वावा श्री को दया आई और आपश्री ने आज्ञा की - 'अरे ! इनको पैदल चलाओंगे तो वेचारे मर जाएँगे ।'

पुलिसवालों ने कहा- 'बाबा ! हम क्या करें ? हमारी तो ड्यूटी है ।'

तव बाबा श्री ने आज्ञा की - 'तुम सब तांगों में मथुरा जाओ और किराया हम से ले जाओ ।'

ऐसे दयालु थे प्रथमेश महाराज श्री ।

(प्रो. एम.आर. पालेजा के वर्णन के आधार पर श्री रवजी भाई पटेल द्वारा प्रस्तुत)

वैष्णव दम्पती पर अलौकिक कृपा

पूज्यपाद गो. श्री द्वारकेशलालजी की ब्रज यात्रा का एक प्रंसग है । यात्रा का मुकाम श्री गिरिराजजी (जतीपुरा) में था. नित्य नूतन मनोरथ हो रहे थे. एक दिन श्री द्वारकेशलालजी महाराज श्री एवं श्री रणछोडलालजी वावा प्रथमेशजी गुलाल कुंड से जरा आगे विराज रहे थे. वैष्णव समूह में होली के पद गाते हुए दोनों स्वरूपों को होली खिला रहे थे. साधनसम्पन्न लोग इकट्ठे होकर भीड़ जमाये हुए थे. अन्य वैष्णव वड़ी संख्या में अपना नम्वर आने की प्रतीक्षा करते हुए होली रसिया में स्वर मिलाते हुए ताली वजाते हुए आनन्दमग्न थे.सवके अन्त में खड़े एक वैष्णव दम्पती इस आनन्द को देख रहे थे. उनके साथ में दो छोटे वच्चे भी थे. शाम का समय होने लगा काफी वैष्णवों के वाद इनका क्रम आने वाले था. तव तक तो अंधेरा हो जाएगा. सुरभि कुंड पर यात्रा के डेरे तक पहुँचने

में छोटे बच्चों के साथ, बड़ी समस्या हो जाएगी. इसलिए अंधेरा होने के पहले पाल तक पहुँचने का उन्होंने निर्णय किया. उनके ह्रदय में इस बात से तीव्र ताप था कि वे गोस्वामी बालकों को होली खिला नहीं सके. पाल की तरफ जाते हुए भी वे पलट - पलट कर देख रहे थे. सभी वैष्णव गोस्वामी बालकों को खिलाने के आनन्द में मग्न थे. किसी का ध्यान इस दम्पती की ओर नहीं था यह वैष्णव परिवार थोड़ा ही आगे चला था कि उन्होंने देखा कि सामने से मन्द - मन्द मुस्कराते हुए पूज्यपाद रणछोडलालजी प्रथमेश बावा पधार रहे हैं. ये पति - पत्नी आश्चर्य करने लगे कि अरे अभी सामने ही सभी वैष्णव बाबा श्री और महाराजश्री दोनों को खिला रहे थे. यदि बाबा सा. वहाँ से पधारें भी तो भीड़ में से निकल कर आने में काफी समय लग जाता. पीछे तो सुरभि कुंड है, उधर से कोई रास्ता भी नहीं है. फिर सामने से बावाश्री कैसे पधार रहे हैं? उन्हें अपने नेत्रों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. तब तक तो श्रीप्रथमेश बाबा पास ही पधार गये. उनके दोनों हाथों में अबीर - गुलाल से भरे हुए दोने थे. बाबाश्री ने आज्ञा की - "अरे वैष्णवो!खिलाए विना ही कैसे लौट रहे हो? लो खिलाओं" यह कहते हुए अपने हाथ के अबीर - गुलाल के दोने वैष्णव दम्पती को पकड़ा दिये. वैष्णवों की रंग खिलाने की मनोकामना पूर्ण हुई. यह था आपश्री का अलौकिक परम पुष्टि अनुग्रह.

('श्री प्रथमेश चरितामृत' सम्पादक रवजी भाई प. पटेल से साभार)

पाक कला निपुण

एक बार पू.पा. प्रथमेशजी महाराज श्री जतीपुरा में विराज रहे थे । शीत काल था। धनुर्मास के कारण सभी सेवा - प्रकार जल्दी सम्पन्न होते थे. उस समय प.भ. श्री गोकुलदास विश्राम प्रातः दर्शन के लिए आये. श्री प्रथमेशजी महाराज ने आरती करने के बाद लौटते समय उन्हें देख लिया और बुला कर आज्ञा की - "चल महाप्रसाद ले ले."

"कृपानाथ ! अभी तो मैंने स्नान भी नहीं किया है । नित्यक्रम भी बाकी है."

" अरे ! श्रीमहाप्रभुजी के वचनामृत प्रभुदास जलोटा की वार्ता में हैं; उनका स्मरण करो- 'यत्र वृन्दावनस्थल तत्र स्नातास्नात कथा कुतः। "

यह आज्ञा होने पर गोकुलदासजी प्रसाद लेने बैठे. आपने अपने हाथों प्रसाद धरते समय आज्ञा की - "गोकुलदास! आज सब रोटी की सेवा मेरी की हुई है। देख इस रोटी में कहीं चुँदड़ी (चुमकी) पड़ी है?" (दाग पड़े हैं?)

"नहीं कृपानाथ !"

"कच्ची हैं? " "नहीं"

गोकुलदास भाई कहते थे कि ऐसी कोमल रोटी का प्रसाद तो जीवन में एक बार

ही मिला. ऐसी दो चार नहीं बल्कि पूरा ढेर आपश्री ने ही सिद्ध किया था.

एक बार बम्बई में सौ - डेढ सौ वैष्णव अधरामृत लेने बैठे. सभी मुखियाजी से कहने लगे "मुखियाजी! आज प्रभु ने दाल तो बहुत ही सुन्दर और अलौकिक स्वादवाली आरोगी है." तब मुखियाजी ने रहस्य खोला कि दाल तो महाराजश्री ने ही सिद्ध की है.

एक बार पूज्य प्रथमेशजी महाराज श्री राजकोट पधारे. किसी वैदिक कार्य के लिए आपश्री ने कोला मँगवाया. जो वैष्णव कोला लेने गये वे भूरा कोला और पीला कोला दोनों ही ले आये. महाराजश्री ने आज्ञा की - "भूरा कोला आ ही गया है तो आज इसकी सामग्री सिद्ध करेंगे." आपश्री ने पैठापाक सिद्ध किया. श्रीजी को आरोगाया. फिर वैष्णवों को महाप्रसाद लिवाया.वैष्णव चकित रह गये. ऐसा शुभ्र, रसमय सुस्वादु पेठा पहली बार देखने को मिला था.

('श्री प्रथमेश चरितामृत' से साभार)

अतिथि सत्कार

कु.रेखा सिंघल, धार

एक वार मेरे बाबूजी डा. गजानन शर्मा भूलेश्वर में लालमणि भवन में आपश्री के पास ठहरे थे. एक दिन आपश्री को कलकत्ता जाना था. आपश्री कलकत्ता जाने के लिए एरोड्रम रवाना हो गये. बहूजी का सन्देश आया कि शर्माजी महाप्रसाद ले लें. लेकिन बाबूजी ने भूख न होने के कारण कुछ भी लेना स्वीकार नहीं किया. संयोग ऐसा रहा कि आपश्री को वायुयान निकल जाने के कारण वापस आना पड़ा. आपश्री को मालूम हुआ कि शर्माजी ने कुछ भी नहीं लिया है. तब आपश्री ने हापुस आम मँगवा कर स्वयं आम की शाक सिद्ध की और पराठे बनवायें. आपश्री की आज्ञानुसार बाबूजी को महाप्रसाद लेना ही पड़ा. बाबूजी हमेशा कहते हैं कि वैसा स्वादिष्ट आम का शाक जीवन में कभी नहीं लिया.

विकलांग माताजी को दर्शन देने पधारे

पं. द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया

बांसवाड़ा नगर की बात है । हम लोग दाहोद के लिये प्रस्थान कर रहे थे इतने में एक वैष्णव ने आकर विनती की कि एक माताजी विकलांग हैं तथा आपके दर्शन करने आने में असमर्थ हैं । आपने निर्णय किया कि उसके घर चले । मैंने प्रार्थना की कि प्रस्थान में विलंब हो जावेगा । दाहोद में कार्यकर्तागण प्रतीक्षा करेंगे । लेकिन आपने कहा " मैं धर्माचार्य हूँ और जब वह वृद्ध माता अपंगता के कारण यहाँ तक नहीं आ सकती तो मैं स्वयं उसके पास जाऊँगा" और आप उसके घर पर पधारे । वह वृद्धा स्तब्ध रह गई और प्रेमाश्रु बहाने लगी । ऐसे कृपालु आचार्य का नित्य लीला में असामयिक प्रवेश अपूरणीय क्षति है ।

ईसाई भिक्षुणी का थैला उठाया

- पं. द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया

एक बार गौहाटी से कलकत्ता तक विमान में मैं पूज्यपाद के साथ था । एक ईसाई धर्म प्रचारिका भी विमान हमारे साथ थी । उसके पास सामान अधिक था । जब कलकत्ता विमानतल पर हम लोग उतरे तब मैंने सहयात्री की भावना से उस ईसाई भिक्षुणी का एक भारी थैला ले लिया । पूज्यपाद ने जब यह देखा जब वे मुस्करा दिये और तत्काल उस वजनदार थैले को विमान के प्रवेशद्वार तक लाने में मेरी सहायता की अर्थात् हम दोनों मिलकर उसे प्रवेशद्वार तक लाये । बाद में आप कहने लगे - '' पता नहीं थैले में क्या था । खैर, नहाना तो वैसे भी है ही, चलो उसे भी पता चल गया कि हिन्दू धर्माचार्य भी कम सेवाभावी नहीं हैं ।'' तत्पूर्व विमान में मैंने पूज्यपाद का परिचय उस भिक्षुणी को दे दिया था ।

गर्भवती को प्रसव करवाया

पं. द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया

यह घटना पूज्यपाद ने स्वयं बताई । एक बार गोआ से कार द्वारा लौटते समय, मार्ग में आपने देखा कि एक वनवासी अपनी झोपड़ी के बाहर बैठा रो रहा था । पूज्यपाद के पूछने पर उसने बताया कि उसकी पत्नी के प्रसव पीड़ा हो रही है । लेकिन ईसाई डाक्टर प्रसव करवाने के पूर्व हमारा धर्म बदलना चाहता है । उसकी पत्नी कह रही थी कि भले ही प्राण चले जावें लेकिन धर्म नहीं बदलेंगे । पूज्यपाद ने तत्काल अपने पास से प्रसव होने का एक इंजेक्शन उस पीड़ित महिला को लगाया और उसे सुखपूर्वक प्रसव हो गया । बाद में मार्ग में एक नदी में वे कपड़ों सहित कूद पड़े और यज्ञोपवीत आदि बदलकर स्वधर्म का पालन किया । ऐसे कृपालु थे आचार्य श्री ।

साक्षात् त्याग मूर्ति

- श्री हरिनारायण नीमा, उज्जैन

पूज्यपाद आचार्यचरण को पद और प्रतिष्ठा भाती नहीं थी । कई बार चर्चा के दौरान आपश्री कहते थे क्या करूँ गादी मेरे साथ चिपकी हुई है । मैं स्वेच्छा से कहीं आ जा नहीं सकता । सही माने में प्रथमेश का अनूठा व्यक्तितव था । वे श्रीमंत योगी थे; सादगी उनकी विशेषता थी, आपश्री के जन्मदिन ज्येष्ठ कृ.५ पर मार्कंडेयपूजा के अवसर पर बमुश्किल मोती की माला और अंगूठी धारण की थी । जतीपुरा में एक बार मेरे समक्ष एक भगवदीया बहिन आई उन्होंने ३ तोले सोने की कंठी आपश्री को भेंट की और इस मंशा से कि पूज्य श्री पहनें । आपश्री ने कहा - '' माताजी ! मैं तो सोना पहनता नहीं ! हाँ श्री मथुराधीश इसे अवश्य धराएँगे ।''

यह तो एक प्रसंग है । आपकी वैभवनिर्लिप्तता के अनेक उदाहरण है । आपश्री

ने विपुल सम्पत्ति श्री मथुरेश प्रभु को अर्पित की । आप स्वयं तो साक्षात् त्याग मूर्ति ही थे ।

समय की पाबन्दी

श्री हरिनारायण नीमा

प्रथमेशजी समय के बड़े ही पावन्द थे । विलम्व उन्हें कदापि सहन नहीं होता था। मुझे इस सम्दर्भ में २५ वर्ष पूर्व का एक प्रसंग याद आ रहा है । उज्जैन में प्रभुचरण गुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी के उत्सव के निमित्त गोविन्द भवन में प्रातः ७.३० बजे आप श्री के कर कमलों से ध्वजोत्तोलन होना था । यथासमय सभी तैयारियाँ पूरी का जा चुकी थीं । इसी समय श्रीनाथजी के मंगला के दर्शन खुल गये. सभी उपस्थित वैष्णवजन दर्शन के लिये चले गये. महाराजश्री प्रथमेशजी ठीक ७.३० वजे गोविन्द भवन पधारे और परिषद का ध्वज फहराया. इसके बाद ध्वज गीत 'जय जय मंगलकारक जय हे' गाया और वापस अपने मुकाम श्री मदनमोहनजी के मन्दिर में पधार गये. इस पूरी अवधि में मैं अकेला आपश्री के साथ था । आपने तब अत्यन्त खिन्न मन से कहा था - ''हरिनारायणजी ! क्या हो गया है, आज के वैष्णवों को, जो समय का महत्व जानते ही नहीं. समय किसी के लिये क्या कभी रुका है? नैरन्तर्य ही इसका गुण है. प्रतिक्षण प्रवहमान काल की महत्ता विरले लोग ही समझते हैं ।

तब मैं अपनी बुनियादी शिक्षा की ट्रेनिंग लेकर शाजापुर से उज्जैन आया ही था. परिषद् ध्वज गीत मुझे मुखाग्र नहीं था. मैंने महाराजश्री से निवेदन किया । तब आपने कृपाकर श्रीहस्त से ध्वजगीत लिख कर मुझे प्रदान किया. आपश्री की हस्तलिपि मेरी निधि है. मैंने यह सँभालकर रखा है.

('श्रीवल्लभस्वर' से साभार)

अगाध सिद्धान्तनिष्ठा

- शास्त्रीजी श्री जितेन्द्र मूलशंकर शुक्ल, बोरीवली, बम्बई

कई वर्षों पूर्व की एक घटना है. वम्वई के मोटा मन्दिर में श्री प्रभुचरण गुसांईजी श्री विट्ठलनाथजी के प्राकट्य प्रसंग में पूज्य गो. मथुरेश्वरजी अथवा गो. चन्द्रगोपालजी के श्रीमुख से भागवत - श्रवण का लाभ वैष्णवों को मिल रहा था. समय - समय पर अन्य आचार्यों एवं विद्वानों के प्रवचन भी होते थे. एक दिन पूज्य श्री की अध्यक्षता में श्री त्रिकमलालजी शास्त्री, मैं, तथा एक प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रीजी (नाम लिखने की आवश्यकता नहीं) के प्रवचन हुए. इस अवसर पर शास्त्रीजी ने अपने प्रवचन में इस प्रकार के भाव प्रकट किये कि श्री गुसांईजी पर मुगलों का प्रभाव था इसी कारण पुष्टिमार्ग में बहुत से फारसी शव्द है. उदाहरणार्थ 'कुलह' 'आवखोरो' आदि. ये कथन आपश्री को इतने गहरे

चुभ गये कि प्रवचन के तत्काल वाद ही आपश्री श्रीत्रिकमलालजी शास्त्री और मुझे लेकर 'लालमणि' गये. वहाँ आपश्री ने अनेक ग्रंथ देखे तथा यह खोज कर निकाला कि सभी शब्द, जो कि फारसी के कहे जाते हैं; वेद में हैं और उनका किस रूप में प्रयोग हुआ है, यह भी खोज लिया. आपने ऐसे शब्दों की बड़ी सूची वना कर उन शास्त्रीजी के पास भिजवा जी और उन्हें तीसरे दिन सभा में उपस्थित रहने की सूचना दी. किन्तु शास्त्रीजी सभा में नहीं आये.यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि सभा के वाद रात्रि को लगभग साढ़े आठ वजे आपश्री शब्दों की खोज में लगे थे और रात्रि को तीन वजे तक श्रम लेकर यह शोध-कार्य करते रहे । इससे आपकी अगाध सिद्धान्तनिष्ठा और भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम का परिचय मिलता है.
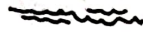
कार्यपूर्ण ही नहीं, सम्पूर्ण और परपूर्ण ही होगा है

मेरा यह पवित्र कर्तव्य है कि मैं पुष्टिमार्ग को ठोस आधार दूं, श्रीहरि और श्रीगुरुचरणों का आदेश बचपन से ही मुझे मिला है, इसलिए उनके आशीर्वचनों के साथ उनका सामर्थ्य और कृपाबल स्वत: मिलता है, इसलिए व्यवहार की अपेक्षा व्यवहारातीत का स्मरण करके जो भी कार्य श्रद्धा और शुद्धबुद्धि से करेंगे तो वह पूर्ण ही नहीं संपूर्ण और परिपूर्ण होगा ही. चाहे जैसा विरोधी प्रचार क्यों न हो लेकिन अपने प्रभु भी ललितत्रिभंग हैं. इसी प्रकार महाप्रभु श्री कृष्ण-हार्दवित् और भक्तिमार्ग के प्रखर तेजोमय मार्तण्ड हैं। इसलिए यदि सेवा सच्ची होगी तो वे भक्त के मनोरथ परिपूर्ण करेंगे ही, यही उनका विरुद है, इतना ही नहीं वे तो महाकरुणिक भी हैं

—प्रथमेश

पाग की छबि

पाग की सज्जा

ग्रामीण-अरण्य-सेवा-संस्थान, झाबुआ (म.प्र.) में

आदिवासी सेवाप्रकल्प के संस्थापक श्री प्रथमेश सन् १९८२

श्री वल्लभदास विट्ठलदास, पोरबंदर के सदैन्य जयश्रीकृष्ण

अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्

हीरक जयन्ती महोत्सव, राजकोट १९८१

परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप की घोषणा पास में गो. श्री ब्रजभूषणलालजी जामनगर

श्री प्रथमेश

श्री बृजमोहनदास विजयवर्गीय, शुजालपुर के सदैन्य जयश्रीकृष्ण

प्रेरक उद्‌बोधन

श्री प्रथमेश (१५.९.१९६७)

अनोखी छटा

रास-रस-मग्न

बटुक वेश में श्री प्रथमेश

यशोदा मैया श्री प्रथमेश

बालकृष्ण की मैया

यशोमती मन अभिलाष करै